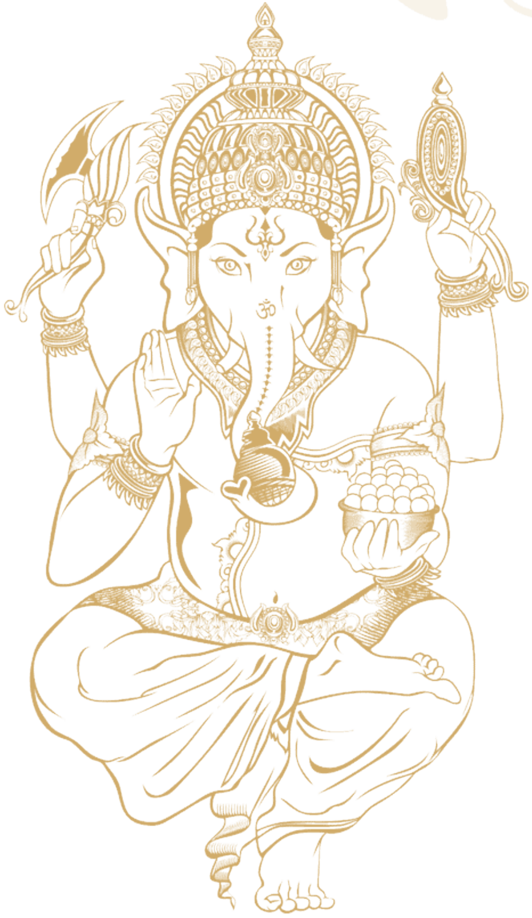

# Aditi Gupta

22 Jun 2008

12:30 PM

Jaunpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120764201

**तिथि** 22/06/2008 **समय** 12:30:00 **वार** रविवार **स्थान** Jaunpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:58:42
**अक्षांश** 25:44:00 उत्तर **रेखांश** 82:41:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:00:44 घंटे

| पंचांग | | अवकहड़ा चक्र | |
|---|---|---|---|
| साम्पातिक काल | 06:34:04 घं | गण | देव |
| वेलान्तर | 00:02:02 घं | योनि | वानर |
| सूर्योदय | 05:09:03 घं | नाड़ी | अन्त्य |
| सूर्यास्त | 18:53:30 घं | वर्ण | वैश्य |
| चैत्रादि संवत | 2065 | वश्य | जलचर |
| शक संवत | 1930 | वर्ग | मार्जार |
| मास | आषाढ़ | युँजा | अन्त्य |
| पक्ष | कृष्ण | हंसक | भूमि |
| तिथि | 4 | जन्म नामाक्षर | खे-खेमा |
| नक्षत्र | श्रवण | पाया(रा.-न.) | रजत-ताम्र |
| योग | वैधृति | होरा | सूर्य |
| करण | बव | चौघड़िया | काल |

**विंशोत्तरी**
चन्द्र 4वर्ष 9मा 3दि
राहु
27/03/2020
27/03/2038

| | |
|---|---|
| राहु | 08/12/2022 |
| गुरु | 02/05/2025 |
| शनि | 08/03/2028 |
| बुध | 26/09/2030 |
| केतु | 14/10/2031 |
| शुक्र | 14/10/2034 |
| सूर्य | 08/09/2035 |
| चन्द्र | 09/03/2037 |
| मंगल | 27/03/2038 |

**योगिनी**
मंगला 0वर्ष 5मा 21दि
उल्का
13/12/2022
13/12/2028

| | |
|---|---|
| उल्का | 14/12/2023 |
| सिद्धा | 12/02/2025 |
| संकटा | 14/06/2026 |
| मंगला | 14/08/2026 |
| पिंगला | 13/12/2026 |
| धान्या | 14/06/2027 |
| भ्रामरी | 13/02/2028 |
| भद्रिका | 13/12/2028 |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 13:41:55 | कन्या | हस्त | 2 | चंद्र | राहु | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 07:15:15 | मिथु | आर्द्रा | 1 | राहु | राहु | सम राशि | 2.43 | ज्ञाति | पितृ | विपत |
| चंद्र | | | 16:59:08 | मक | श्रवण | 3 | चंद्र | शनि | सम राशि | 1.07 | भ्रातृ | मातृ | जन्म |
| मंगल | | | 00:28:37 | सिंह | मघा | 1 | केतु | केतु | मित्र राशि | 1.37 | कलत्र | भ्रातृ | वध |
| बुध | | | 19:16:45 | वृष | रोहिणी | 3 | चंद्र | बुध | मित्र राशि | 1.10 | अमात्य | ज्ञाति | जन्म |
| गुरु | व | | 25:36:23 | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 4 | शुक्र | बुध | स्वराशि | 1.16 | आत्मा | धन | मित्र |
| शुक्र | | अ | 10:50:35 | मिथु | आर्द्रा | 2 | राहु | शनि | मित्र राशि | 1.34 | मातृ | कलत्र | विपत |
| शनि | | | 09:48:01 | सिंह | मघा | 3 | केतु | शनि | शत्रु राशि | 0.99 | पुत्र | आयु | वध |
| राहु | व | | 25:24:29 | मक | धनिष्ठा | 1 | मंगल | राहु | मित्र राशि | | --- | ज्ञान | सम्पत |
| केतु | व | | 25:24:29 | कर्क | आश्लेषा | 3 | बुध | राहु | मित्र राशि | | --- | मोक्ष | साधक |

## लग्न-चलित

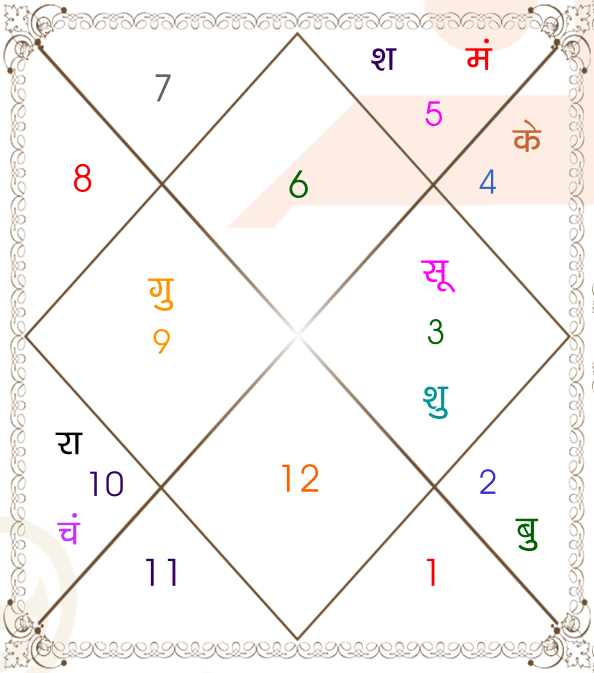


## चन्द्र कुंडली

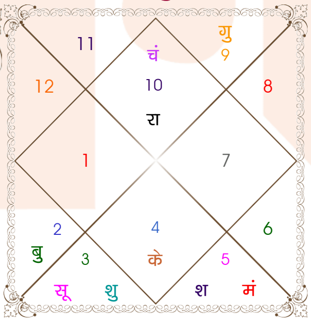

## नवमांश कुंडली

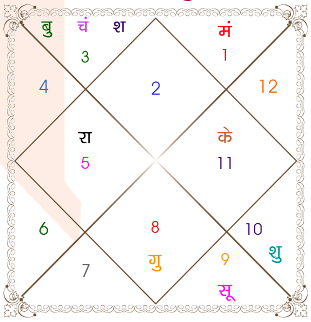

## सर्वाष्टकवर्ग

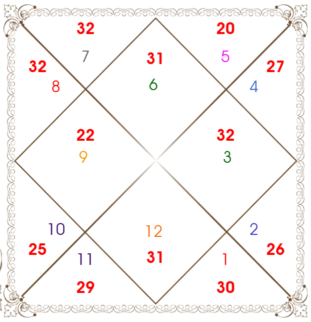

## दशमांश कुंडली

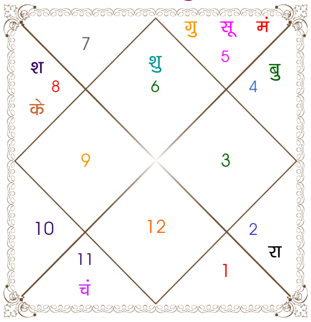


**Jyotishi Kamal Dubey**
Saubhagya Salah Jyotish Kendra Burari Delhi-110084
9868588062
Saubhagyasalahwithkamal@gmail.com

# नक्षत्रफल

आप श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ण वैश्य, गण देव, वर्ग मार्जार तथा योनि वानर होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "खे" या "खै" अक्षर से होगा।

आप विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के ज्ञानार्जन में रूचिशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। आपकी पुत्र संतति कन्या संतति की अपेक्षा अधिक रहेगी। साथ ही आपके मित्रों की संख्या भी अधिक ही रहेगी एवं इनसे आप समय समय पर सहयोग प्राप्त करते रहेंगे। सज्जन पुरूषों एवं विद्वानों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके शत्रु हमेशा आपसे पराजित रहेंगे एवं आपका सामना करने में वे प्रायः असमर्थ ही होंगे। इसके साथ ही धार्मिक ग्रन्थों तथा पुराणों आदि के श्रवण में भी आपकी रूचि रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इनका श्रवण करती रहेंगी।

**शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।**
**प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं सेवा की भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इनकी श्रद्धापूर्वक सेवा तथा पूजा करने के लिए उद्यत रहेंगी। आप एक धनाढ्य महिला होंगी तथा आनन्द पूर्वक जीवन में धर्म का उपभोग करेंगी। इसके साथ ही आप अपनी बुद्धि तथा योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद को प्राप्त भी कर सकेंगी। आप एक धर्मनिष्ठ महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक इसका जीवन में अनुपालन करती रहेंगी।

**श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।**
**जातक परिजातः**

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक प्रतिष्ठित एवं गणमान्य महिला होंगी तथा सभी लोग आपको हादिक आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। विविध शास्त्रों में पारंगत होने के कारण आप एक विदुषी के रूप में भी आदरणीय रहेंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। आप के मन में उदारता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द

लोगों के प्रति आप अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी एवं उन्हें यथा शक्ति सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आप एक धनवान बुद्धमान एवं गुणवान पुरूष की पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त करेंगी तथा सम्पूर्ण सुख संसाधनों से युक्त हो कर आनन्द पूर्वक अपना गृहस्थ जीवन व्यतीत करेंगी।

**श्रीमात्रछ्वणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप कृतज्ञता के सद्गुण से भी सुशोभित रहेंगी तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा हृदय से उनका आभार भी प्रकट करेंगी। आपके इस सद्गुण से अन्य भी आपसे प्रभावित होंगे एवं आपका सम्मान भी करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। साथ ही आपकी सन्ततियां भी अधिक होंगी। आप सर्व गुणों से सुसम्पन्न होगी तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

**कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।**
**श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विन्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपका कद ऊंचा रहेगा एवं ललाट भी विस्तृत होगा। आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय होगी एवं आखें भी सुन्दर तथा आकर्षक रहेंगी। संगीत के प्रति आपके मन में विशेष सम्मान रहेगा तथा इसमें आप विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगी। शीत से आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगी तथा प्रायः इसको सहन करने में असमर्थ रहेंगी।

आप की सत्य के प्रति गहन श्रद्धा होगी तथा नित्य सत्यानुपालन में रत रहेंगी। अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करने के लिए आप धर्म के प्रति अपना श्रद्धाभाव प्रदर्शित करेंगी एवं उसका आचरण भी करेंगी। समाज में सभी वर्गो के साथ आपका मधुर व्यवहार रहेगा एवं इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी रहेगी। आप में क्रोध का भाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। सभी लोगों से आप प्रेम एवं स्नेह का भाव रखेंगी तथा घृणा एवं वैमनस्य के भाव का आप में प्रायः अभाव ही रहेगा। आप अपनी आयु से अधिक आयु के लोगों से मित्रता संबंध करने के लिए उत्सुक होगी तथा गहन मैत्री भी इन्हीं से रहेगी। लेखन कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा काव्य सृजन के क्षेत्र में आप सफलता एवं ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आप में उत्साह के भाव की भी अल्पता रहेगी एवं लालची प्रवृति होने से आप कभी कभी अनावश्यक समस्याएं भी अपने लिए उत्पन्न करेंगी।

**गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी**
**प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।**
**चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो**
**मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।**
**सारावली**

आपका अधिकाँश समय अपने परिवार के पालन में ही व्यतीत होगा। आप शीघ्र ही दूसरे लोगों की बातों से सहमत हो जाएंगी तथा उनके कथनानुसार ही उसका आचरण करने के लिए भी तत्पर रहेंगी आप स्वभाव से आलसी भी होंगी अतः आपके कार्य विलम्ब से ही सम्पन्न होंगे। परन्तु आपका भाग्य प्रबल रहेगा। अतः कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाएंगे। घूमने फिरने एवं यात्रा करने में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा आपका अधिकाँश समय इसी में ही व्यतीत होगा। शारीरिक बल आप में मध्यम रूप से रहेगा परन्तु शौर्य गुणों से आप सुसम्पन्न होंगी। अतः कठिन कार्यों को करने तथा अगम्य स्थानों पर भ्रमण करने की आप में तीव्र इच्छा रहेगी एवं इसके लिए आप प्रयत्न शील भी रहेंगी। आप के हृदय में कोमलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से आप प्रायः पीड़ित रहेंगी एवं इनमें कष्टानुभूति करेंगी। साथ ही सर्वप्रकार के सत्वगुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगी।

**नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।**
**स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।**
**शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।**
**लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।**
**बृहज्जातकम्**

परिवार में आपकी स्थिति सम्मान प्राप्त करने में सामान्य ही रहेगी। परन्तु परिवार या कुल की मर्यादा तथा रीति को बढ़ाने में आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी तथा इस कार्य को करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपके वश में रहेंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को आपके कहने तथा निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे तथा स्वतंत्र निर्णय लेने

में वे सर्वथा असमर्थ ही रहेंगे। आप भद्रपुरूषों से हमेशा प्रशंसा प्राप्त करेंगी एवं इनके लिए आदरणीया भी रहेंगी। आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगी तथा जीवन में इनका पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। भाई बन्धुओं के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग तथा मोह रहेगा एवं इनके सहयोग के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण साथ निभाएंगी। आप एक धनाढ्य महिला होगी तथा धनैश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आप में त्याग की भावना नैसर्गिक रूप से रहेगी तथा समयानुकूल परिवार तथा समाज में आप अपनी इस भावना का अनुपालन करती रहेंगी। आपका परिवार भी विस्तृत रहेगा एवं इसके सदस्यों की संख्या अधिक रहेगी। सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए आप प्रायः चिन्तित रहेंगी एवं उसको प्राप्त करने के लिए नित्य परिश्रम एवं प्रयत्न भी करेंगी।

**कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।**
**गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।**
**धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।**
**परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।**
**मानसागरी**

आप कभी न कभी जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन सम्पति को प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक उसका उपभोग भी करेंगी। आप समाज में सभी वर्गो की भलाई के लिए समान रूप से चिन्तित रहेंगी तथा यत्न पूर्वक उनकी समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर रहेंगी एवं तन मन धन से अपना सहयोग भी अर्पित करेंगी। साथ ही सलाह देने या आपसी मंत्रणा करने के कार्य में भी आप दक्ष रहेंगी एवं आपकी इस प्रवृति से अन्य लोग भी समय समय पर लाभन्वित होते रहेंगे। बन्धु वर्ग की आप पालनकर्ता रहेंगी तथा उनकी सब प्रकार से सेवा तथा सहायता करती रहेंगी। इसके साथ ही आप में वीरता के गुणों की बहुलता रहेगी तथा अपनी समस्त समस्याओं का साहस पूर्वक सामना करके उनका समाधान भी करेंगी।

**विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।**
**नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।**
**कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।**
**भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।**
**जातक दीपिका**

गीतशास्त्र के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इस क्षेत्र में आपको विशेषज्ञता तथा ख्याति प्राप्त होगी। आपकी शारीरिक कान्ति एवं लावण्यता भी दर्शनीय होगी तथा इससे आपके सौन्दर्य में भी वृद्धि होती रहेगी।

**कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।**
**निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।**
**जातका भरणम्**

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुरता से युक्त श्रेष्ठ रहेगी। साथ ही आप सरल बुद्धि से युक्त रहेंगी। आप अपने विचारों को सुगमतापूर्वक अन्य जनों के समक्ष प्रकट करेंगी तथा दूसरे के विचारों को भी सुगमता से हृदय में ग्रहण करेंगी। आप अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर प्रतीत होगा। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी विद्वानों द्वारा वर्णित सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी। साथ ही अच्छे बुरे की पहचान करने में भी आप सक्षम रहेंगी। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के धनैश्वर्य से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेगी

आपका शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति आपके मन में विद्यमान रहेगी एवं समय समय पर इसका आप अनुपालन भी करती रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा हमेशा सादगी पूर्ण ढंग से रहने की इच्छा करेंगी। साथ ही अनावश्यक दिखावे से भी यत्नपूर्वक दूर ही रहेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न शास्त्रों की ज्ञाता होने के कारण एक श्रेष्ठ विदुषी के रूप में समाज में आपका सम्मान होता रहेगा।

**सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।**
**जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में जन्म होने के कारण आप में चंचलता के भाव की अधिकता रहेगी तथा आपके अधिकाँश कार्य चंचलता से ही सम्पन्न होंगे। मिष्ठान का भक्षण करना भी आपको प्रियकर लगेगा। धन प्राप्ति के लिए आपके मन में व्याकुलता रहेगी तथा इसको प्राप्त करते समय भी आप आतुरता का प्रदर्शन करेंगी। काम भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा आपकी सभी सन्तानें बुद्धिमान एवं गुणवान रहेंगी। अन्यजनों से विवाद आदि करने की भी आपकी प्रवृति रहेगी तथा किसी न किसी से परस्पर विवाद आदि आपका होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक वीर साहसी एवं निर्भीक महिला भी होंगी तथा साहस पूर्वक समय व्यतीत करेंगी।

**चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।**
**सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही

कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों , रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता,

व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं आ रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए एवं शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंच धातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी ।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।**
**मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।**

**Jyotishi Kamal Dubey**
Saubhagya Salah Jyotish Kendra Burari Delhi-110084
9868588062
Saubhagyasalahwithkamal@gmail.com